Platinum Edition

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

बलूचिस्तान का भविष्य व भारत : स्वतंत्र राष्ट्र या पाकिस्तान का प्रान्त

अनुपमा कौशिक

बलूचिस्तान पाकिस्तान के चार प्रान्तों में से सबसे बड़ा प्रान्त है। यह पाकिस्तान के भूभाग का 44 प्रतिशत है परन्तु इसकी जनसंख्या पाकिस्तान की जनसंख्या का दस प्रतिशत भी नहीं है। यहाँ रहने वाले अधिक्तर लोग बलोच हैं हालांकि कुछ पशतून व ब्राहुई हैं। ये इलाका प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है जैसे सोना, तेल, गैस व तांबा परन्तु यह पाकिस्तान का सबसे पिछड़ा इलाका है। बलूच लोग स्वयं को अन्य पाकिस्तानियों से अलग मानते हैं तथा मानते है कि पंजाबियों द्वारा उनका शोषण किया जा रहा है। वे ये भी मानते है कि पाकिस्तान ने बलूनिस्तान पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया है जबकि बलूचिस्तान पाकिस्तान निर्माण के पहले ही एक स्वतंत्र राष्ट्र बन चुका था। बलूच पाकिस्तान से स्वतंत्र होकर एक स्वतंत्र राष्ट्र-राज्य के रूप में मान्यता चाहते हैं व उसके लिए संघर्ष कर रहे हैं व इसमें भारत की मदद चाहते है जो मदद भारत ने उन्हें कभी नहीं दी। परन्तु पाकिस्तान बलूचिस्तान में होने वाले स्वतंत्रता संग्राम के लिए (जिसे वह आतंकवाद कहता है) भारत को जिम्मेदार ठहराता है व पाकिस्तान बलूची लोगों की हत्या करता है व उनके ऊपर आत्याचार करता है। प्रश्न यह है कि क्या भारत को बलूचिस्तान में फैले असंतोष व स्वतंत्रता संग्राम को समर्थन देना चाहिए? ये प्रश्न इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योकि चीन इस इलाके पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

स्वतंत्र इतिहास -

बलूचिस्तान का नाम बलूच लोगों से निकला जो यहाँ के निवासी हैं। ये लोग सुन्नी मुसलमान हैं जो एक ईरानी भाषा बलूची बोलते हैं जो कुर्दिश भाषा के करीब है। सांस्कृतिक बलूचिस्तान का बड़ा हिस्सा पाकिस्तान में है परन्तु कुछ हिस्सा ईरान व अफगास्तिान में भी है।

प्राचीन काल मे ये क्षेत्र एकाकमेनिड परसियन साम्राज्य का हिस्सा था पर बाद में ईरानी व भारतीय साम्राज्यों का हिस्सा था। यहाँ ईरानी व भारतीय लोग रहा करते थे जो बौद्धधर्म व जोरोस्ट्रियन धर्म के मानने वाले थे। इस्लाम के यहाँ आने से पहले यहाँ सिंध के राय वंश का नियंत्रण था। 644 ईस्वी में अरब लोगों ने इन्हें हराया व इस्लाम का प्रचार किया। 1500 में ये सफाविद परशियन साम्राज्य (आज का ईरान) तथा मुगल साम्राज्य (आज का पाकिस्तान) के बीच बँट गया जो विभाजन अब तक कायम है। मुगलों ने इसका नियंत्रण अपने स्थानीय अधिनस्त कालाट के खनातों को सौंप दिया। बलूचिस्तान का बँटवारा कुछ समय के लिए गायब हो गया जब इन साम्राज्यों का अंत हुआ व बलूचिस्तान कई राज्यों में बँट गया जिसमें कालाट सबसे महत्त्वपूर्ण

मध्य भारती-75, जुलाई-दिसम्बर, 2018, ISSN 0974-0066, *pp. 157-162*